पाठ – कठपुतली

गुस्से से उबली …….. मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।

व्याख्या – कविता की इन पंक्तियों में कवि भवानी प्रसाद मिश्र जी ने एक कठपुतली के मन के भावों को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। इन पंक्तियों में एक कठपुतली बहुत अधिक गुस्सा होते हुए कह उठती है कि उसके आगे – पीछे ये धागे क्यों बांधे गए हैं ? कठपुतली कहती है कि ये सभी धागे तोड़ दो और उसे उसके पैरों पर छोड़ दो। कहने का तात्पर्य यह है कि कठपुतली धागों की सहायता से किसी और के इशारों पर नहीं चलना चाहती। वह इन धागों से मुक्त हो कर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है अर्थात वह स्वतन्त्र होना चाहती है।

सुनकर बोलीं और – और……हमें अपने मन के छंद छुए।

व्याख्या – कविता की इन पंक्तियों में कवि भवानी प्रसाद मिश्र जी ने कठपुतली और उसकी अन्य सभी साथी कठपुतलियों के मन के भाव दर्शाए हैं। पहली कठपुतली के मुँह से स्वतंत्र होने की बात सुनकर अन्य सभी कठपुतलियाँ भी उससे कहती हैं कि हाँ , उन्हें भी स्वतंत्र होना है। कठपुतलियाँ कहती हैं कि इन धागों के बंधन में बंधे हुए बहुत दिन हो गए हैं और उन्होंने इतने दिनों में अपने मन में ख़ुशी का एहसास भी नहीं किया है। अर्थात न जाने कितने दिनों से स्वतन्त्र हो कर उन्होंने ख़ुशी से कोई काम नहीं किया है।

मगर…

पहली कठपुतली……मेरे मन में जगी ?

व्याख्या – कविता की इन अंतिम पंक्तियों में कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने पहली कठपुतली के मन के संदेहात्मक स्थिति के भावों को दर्शाया है। कवि कहते हैं कि जब बाकी सभी कठपुतलियाँ पहली कठपुतली की स्वतंत्र हो कर रहने की बात का समर्थन करती हैं और सभी स्वतन्त्र होने की बात करती हैं , तो पहली कठपुतली सोच में पड़ जाती है कि उसके मन में ये कैसी भावना जागृत हुई और क्यों ? कहने का तात्पर्य यह है कि पहली कठपुतली सोच में पड़ गई थी कि क्या वो सही कर रही है ? क्या वो सभी कठपुतलियों की स्वतंत्रता की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले पाएगी ? क्या उसकी स्वतन्त्र होने की इच्छा जायज़ है ?